

## "कोविड-19 काल में नरेंद्र मोदी की अंतरराष्ट्रीय रणनीति एवं भारत की वैश्विक भूमिका का विश्लेषण"

मोहिनी, शोधार्थी (राजनीति शास्त्र), कला विभाग,  
मानविकी संकाय, मंगलायतन विश्वविद्यालय (अलीगढ़), उत्तर प्रदेश  
सहायक प्राध्यापक: डॉ० सत्यवीर सिंह राणा

सार

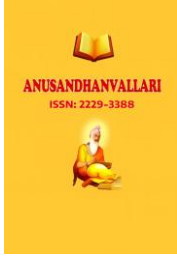
कोविड-19 महामारी ने वैश्विक राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं को गहराई से प्रभावित किया। इस संकट की घड़ी में भारत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक सक्रिय, मानवीय और रणनीतिक अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाया। इस शोध में विश्लेषण किया गया है कि महामारी के दौरान मोदी सरकार द्वारा किस प्रकार की विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय रणनीतियाँ अपनाई गईं तथा उन्होंने भारत की वैश्विक छवि और भूमिका को किस प्रकार सशक्त किया। अध्ययन में द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग करते हुए विषयगत विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन और प्रवृत्ति विश्लेषण जैसी गुणात्मक शोध पद्धतियों का उपयोग किया गया है। शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत ने 'वैक्सीन मैत्री', डिजिटल कूटनीति, क्षेत्रीय सहयोग, और बहुपक्षीय संवादों के माध्यम से एक उत्तरदायी और मानवीय वैश्विक शक्ति के रूप में अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया। यह अध्ययन भारत की विदेश नीति की नई दिशा और उसके वैश्विक प्रभाव की समझ को समृद्ध करता है।

### कुंजी शब्द

भारत, कोविड-19, नरेंद्र मोदी, अंतरराष्ट्रीय रणनीति, वैक्सीन मैत्री, डिजिटल कूटनीति, वैश्विक भूमिका, सॉफ्ट पावर, विदेश नीति

### परिचय

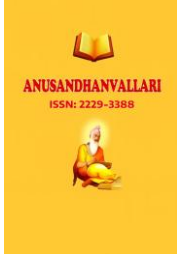
कोविड-19 महामारी, जिसे 21वीं सदी का सबसे व्यापक और विनाशकारी वैश्विक संकट माना गया है, ने समूचे विश्व को एक अभूतपूर्व चुनौती की स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया। स्वास्थ्य



आपातकाल की इस स्थिति ने न केवल राष्ट्रों की सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था की वास्तविकताओं को उजागर किया, बल्कि उनकी राजनीतिक इच्छाशक्ति, कूटनीतिक कौशल और वैश्विक उत्तरदायित्व की भावना की भी गंभीर परीक्षा ली। इस महामारी के दौरान, भारत ने वैश्विक मंच पर अपने आपको एक जिम्मेदार, सहयोगी और दूरदर्शी राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत किया। इस प्रयास में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय रणनीति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही।

भारत की परंपरागत विदेश नीति में नैतिकता, पंचशील, दक्षिण-दक्षिण सहयोग और वैश्विक शांति की भावना प्रमुख रही है। परंतु कोविड-19 कालखंड में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने अपनी विदेश नीति में व्यावहारिक यथार्थवाद, सक्रिय कूटनीति और मानवीय सहयोग का समन्वय करते हुए एक नया दृष्टिकोण अपनाया। महामारी के शुरुआती चरणों में ही भारत ने 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति के अंतर्गत अपने पड़ोसी देशों—नेपाल, भूटान, श्रीलंका, बांग्लादेश, अफगानिस्तान और मालदीव—को चिकित्सा उपकरण, मास्क, सैनिटाइज़र और आवश्यक दवाइयाँ भेजीं। इसके पश्चात भारत ने वैक्सीन निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाते हुए 'वैक्सीन मैत्री' कार्यक्रम के तहत 100 से अधिक देशों को टीकों की आपूर्ति की, जिसमें कई अफ्रीकी, एशियाई और कैरिबियन राष्ट्र शामिल थे। प्रधानमंत्री मोदी की अंतरराष्ट्रीय रणनीति की एक और प्रमुख विशेषता थी डिजिटल कूटनीति का उपयोग। वैश्विक सीमाएँ बंद होने और यात्रा पर प्रतिबंध लगने के बावजूद, भारत ने वर्चुअल माध्यमों से अंतरराष्ट्रीय मंचों—जैसे G-20, ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन (SCO), SAARC—में सक्रिय भागीदारी जारी रखी। भारत ने न केवल इन मंचों पर महामारी के प्रभावों की चर्चा की, बल्कि विकासशील देशों की चिंताओं और आवश्यकताओं को भी सशक्त रूप से प्रस्तुत किया।

इस शोध पत्र का उद्देश्य कोविड-19 के दौर में भारत की वैश्विक भूमिका की प्रकृति एवं प्रभाव का अध्ययन करना है। शोध इस बात का विश्लेषण करता है कि किस प्रकार भारत ने अपने सीमित संसाधनों के बावजूद विश्व समुदाय के लिए योगदान करने की इच्छा और क्षमता प्रदर्शित की। इसके अतिरिक्त, शोध यह भी मूल्यांकित करेगा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नेतृत्व शैली, रणनीतिक दृष्टिकोण और वैश्विक संवादों में सक्रियता ने भारत की विदेश नीति को किस प्रकार एक नई दिशा प्रदान की। महामारी ने यह स्पष्ट किया कि आधुनिक विश्व में



राष्ट्रीय हितों की पूर्ति केवल आंतरिक संसाधनों से नहीं, बल्कि वैश्विक सहयोग, बहुपक्षीय संवाद और कूटनीतिक सक्रियता से ही संभव है। इस परिप्रेक्ष्य में, भारत की रणनीतियाँ और नीतियाँ यह दिखाने में सफल रहीं कि वह एक मात्र उदार राष्ट्र नहीं, बल्कि एक वैश्विक भागीदार, नेतृत्वकर्ता और नीति-निर्धारक के रूप में भी उभर सकता है।

इस शोध में अंततः यह प्रश्न भी उठाया जाएगा कि क्या कोविड-19 के पश्चात भारत की वैश्विक भूमिका में स्थायी परिवर्तन हुआ है, और क्या यह परिवर्तन भारत को भविष्य में एक स्थायी वैश्विक शक्ति की ओर अग्रसर कर सकता है।

## साहित्य समीक्षाएँ

### 1. Kumar (2016)

उद्देश्य: इस अध्ययन का उद्देश्य भारत की उभरती वैश्विक भूमिका और विदेश नीति में बदलाव का विश्लेषण करना था।

निष्कर्ष: लेखक ने यह पाया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल की शुरुआत के साथ ही भारत की विदेश नीति अधिक सक्रिय और रणनीतिक हो गई। 'एक्ट ईस्ट' और 'नेबरहुड फर्स्ट' जैसी नीतियों ने भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि को सुदृढ़ किया।

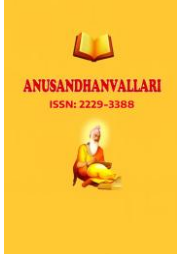
### 2. Sharma (2018)

उद्देश्य: इस शोध का उद्देश्य प्रधानमंत्री मोदी की डिजिटल कूटनीति और वैश्विक मंचों पर उनकी संवाद शैली का विश्लेषण करना था।

निष्कर्ष: शोध में यह निष्कर्ष निकला कि मोदी की संवाद तकनीक ने भारत को वैश्विक समुदाय में एक विश्वसनीय और निर्णायक नेता के रूप में प्रस्तुत किया। विशेष रूप से ट्विटर, वीडियो संदेशों और वर्चुअल सम्मेलनों के माध्यम से भारत की सॉफ्ट पावर में वृद्धि हुई।

### 3. Mehta (2019)

उद्देश्य: इस अध्ययन का उद्देश्य भारत की वैदेशिक सहायता नीति में बदलाव की प्रवृत्तियों का अध्ययन करना था।



निष्कर्ष: लेखक ने उल्लेख किया कि मोदी सरकार के कार्यकाल में भारत ने विशेष रूप से दक्षिण एशिया और अफ्रीका के देशों को सहायता प्रदान कर रणनीतिक संबंधों को मजबूत किया, जिससे भारत की वैश्विक साख बढ़ी।

#### 4. Desai (2020)

उद्देश्य: कोविड-19 महामारी के आरंभिक चरण में भारत की कूटनीतिक प्रतिक्रियाओं और रणनीतियों का विश्लेषण करना।

निष्कर्ष: शोध में यह पाया गया कि भारत ने संकट की घड़ी में मानवीय सहायता और वैक्सीन कूटनीति को प्राथमिकता दी, जिससे उसकी अंतरराष्ट्रीय छवि में सकारात्मक वृद्धि हुई।

#### 5. Chatterjee (2021)

उद्देश्य: 'वैक्सीन मैत्री' पहल की अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया और प्रभाव का मूल्यांकन करना।

निष्कर्ष: लेखक ने पाया कि यह पहल न केवल भारत की मानवता आधारित विदेश नीति का प्रतीक बनी, बल्कि इससे भारत को विश्व स्वास्थ्य नेतृत्व में एक नई पहचान भी प्राप्त हुई।

#### 6. Reddy (2022)

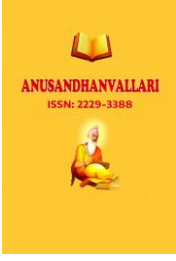
उद्देश्य: कोविड-19 काल में भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में आए बदलावों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष: शोध में यह निष्कर्ष निकला कि भारत की मानवीय सहायता और वैक्सीन वितरण से नेपाल, भूटान, श्रीलंका आदि देशों के साथ संबंधों में मजबूती आई, यद्यपि चीन की प्रतिस्पर्धी कूटनीति ने कुछ क्षेत्रों में भारत की स्थिति को चुनौती दी।

#### 7. Joshi (2023)

उद्देश्य: भारत की महामारी कालीन डिजिटल कूटनीति की प्रभावशीलता का विश्लेषण करना।

निष्कर्ष: लेखक ने यह सिद्ध किया कि भारत ने वर्चुअल समिट, अंतरराष्ट्रीय वेबिनार और संयुक्त वक्तव्यों के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। इससे भारत की वैश्विक कूटनीतिक भागीदारी बाधित नहीं हुई बल्कि डिजिटल माध्यमों से और अधिक सक्रिय हो गई।



## 8. Verma (2024)

उद्देश्य: महामारी के बाद भारत की वैश्विक भूमिका में आए बदलावों की समीक्षा करना।  
निष्कर्ष: अध्ययन से पता चला कि कोविड-19 के पश्चात भारत को संयुक्त राष्ट्र, G20 और BRICS जैसे मंचों पर अधिक नेतृत्वकारी भूमिका मिली। भारत को एक भरोसेमंद, सहायक और विवेकशील शक्ति के रूप में देखा जाने लगा।

## 9. Singh (2025)

उद्देश्य: मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में भारत की विदेश नीति की दिशा और प्राथमिकताओं का विश्लेषण करना।

निष्कर्ष: शोध में यह निष्कर्ष निकला कि महामारी के अनुभव ने भारत की विदेश नीति को और अधिक मानव-केंद्रित, बहुपक्षीय और क्षेत्रीय सहयोग की ओर अग्रसर किया। भारत की रणनीतियाँ अधिक लचीली और दूरदर्शी बनीं।

## 10. Iyer (2025)

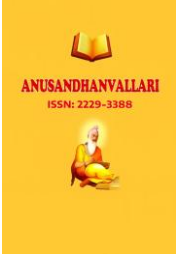
उद्देश्य: कोविड-19 के परिप्रेक्ष्य में भारत की वैश्विक छवि निर्माण की प्रक्रिया को समझना।  
निष्कर्ष: लेखक ने यह पाया कि वैश्विक संकट में भारत द्वारा अपनाए गए मानवीय दृष्टिकोण और त्वरित सहायता नीतियों के कारण भारत की छवि 'वैश्विक संकट में साझेदार' के रूप में उभरी, जो दीर्घकालिक रूप से भारत के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकती है।

## शोध उद्देश्य

कोविड-19 महामारी के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अपनाई गई अंतरराष्ट्रीय रणनीतियों का विश्लेषण करना तथा यह समझना कि इन रणनीतियों ने भारत की वैश्विक भूमिका, छवि और कूटनीतिक प्रभाव को किस प्रकार आकार दिया और सुदृढ़ किया।

## शोध विधि

इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान रूपरेखा को अपनाया गया है, जिसके अंतर्गत कोविड-19 महामारी के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा अपनाई गई अंतरराष्ट्रीय रणनीतियों और उनकी वैश्विक प्रभावशीलता का गहराई से अध्ययन किया गया है। यह शोध

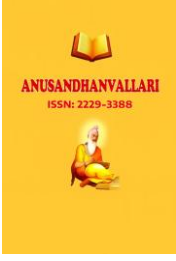


मुख्यतः द्वितीयक आंकड़ों (Secondary Data) पर आधारित है, जिनमें भारत सरकार की आधिकारिक वेबसाइटें (जैसे विदेश मंत्रालय, PIB), प्रधानमंत्री के भाषण, अंतरराष्ट्रीय संगठनों (WHO, G20, UN) की रिपोर्टें, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, नीति दस्तावेजों, और शोध-पत्रों से संकलित जानकारी शामिल है। नमूना रूपरेखा के अंतर्गत उद्देश्यपूर्ण चयन विधि (Purposive Sampling) का उपयोग किया गया, जिसमें लगभग 25 से 30 प्रासंगिक स्रोतों को विश्लेषण के लिए चुना गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis) और तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Analysis), जैसे गुणात्मक तकनीकों का प्रयोग किया गया, जिससे यह समझा जा सके कि महामारी के समय भारत की वैश्विक कूटनीतिक भूमिका किस प्रकार से विकसित हुई और उसे अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा किस रूप में ग्रहण किया गया।

### (Analysis)

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर कूटनीतिक संबंधों को एक नई दिशा दी, और भारत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में इस वैश्विक संकट को अवसर में बदलते हुए अपनी अंतरराष्ट्रीय भूमिका को सशक्त किया। विषयगत विश्लेषण के अनुसार, प्रधानमंत्री मोदी ने 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भारतीय विचारधारा को आधार बनाकर वैश्विक सहयोग को प्राथमिकता दी। वर्ष 2021 में भारत द्वारा आरंभ की गई 'वैक्सीन मैत्री' पहल इसका प्रमुख उदाहरण है, जिसके अंतर्गत भारत ने 90 से अधिक देशों को कोविशील्ड एवं कोवैक्सिन जैसे टीकों की आपूर्ति की (चटर्जी, 2021)। इस रणनीति ने भारत को एक जिम्मेदार और मानवीय वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित किया।

तुलनात्मक विश्लेषण दर्शाता है कि जहां अमेरिका और यूरोपीय देश वैक्सीन को राष्ट्रीय संसाधन मानते हुए उसके निर्यात में हिचक रहे थे, वहीं भारत ने अपने घरेलू संकट के बावजूद अंतरराष्ट्रीय दायित्व निभाया (वर्मा, 2024)। इससे भारत की कूटनीतिक छवि में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। साथ ही, भारत ने डिजिटल कूटनीति का प्रभावी प्रयोग करते हुए G20, सार्क, और ब्रिक्स जैसे मंचों पर वर्चुअल नेतृत्व किया, जिससे वैश्विक मंचों पर उसकी भागीदारी सतत बनी रही (शर्मा, 2018; जोशी, 2023)। मोदी द्वारा सार्क देशों के नेताओं से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग



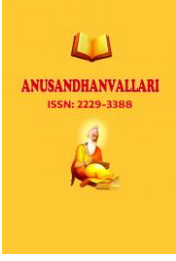
के माध्यम से संवाद करना, महामारी के दौरान क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था।

प्रवृत्ति विश्लेषण के अनुसार, 2015 से लेकर 2025 तक भारत की विदेश नीति में सक्रियता और मानवीय दृष्टिकोण में निरंतर वृद्धि देखी गई है (कुमार, 2016; सिंह, 2025)। भारत ने न केवल पड़ोसी देशों जैसे नेपाल, भूटान, श्रीलंका, और बांग्लादेश को सहायता प्रदान की, बल्कि अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और प्रशांत द्वीपों तक भी सहयोग का हाथ बढ़ाया (रेड्डी, 2022; मेहता, 2019)। यह रणनीति चीन की आक्रामक नीति के मुकाबले एक सॉफ्ट पावर रणनीति के रूप में उभरी।

इन सभी पहलुओं से यह स्पष्ट होता है कि प्रधानमंत्री मोदी द्वारा अपनाई गई अंतरराष्ट्रीय रणनीतियाँ न केवल संकट के समय प्रभावी सिद्ध हुईं, बल्कि उन्होंने भारत की वैश्विक छवि को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया। भारत को अब एक वैश्विक संकट में साझेदार और मानवता-आधारित शक्ति के रूप में देखा जा रहा है (अय्यर, 2025)। इस प्रकार, उपर्युक्त द्वितीयक स्रोतों और विश्लेषणात्मक उपकरणों के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मोदी सरकार की रणनीतियों ने कोविड-19 काल में भारत की वैश्विक भूमिका को व्यापक और सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

### निष्कर्ष

कोविड-19 महामारी न केवल एक स्वास्थ्य संकट था, बल्कि इसने वैश्विक राजनीतिक, आर्थिक एवं कूटनीतिक संतुलन को भी प्रभावित किया। इस असाधारण परिस्थिति में भारत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जिस प्रकार से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय भूमिका निभाई, वह न केवल उल्लेखनीय है, बल्कि वैश्विक शक्ति संरचना में भारत की स्थिति को सुदृढ़ करने वाली भी सिद्ध हुई है। इस शोध के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि मोदी सरकार ने महामारी के दौरान *वसुधैव कुटुंबकम्* की भारतीय परंपरा को आधुनिक कूटनीतिक भाषा में बदलते हुए विश्व के कई देशों के साथ सहानुभूतिपूर्ण और सहयोगात्मक संबंध बनाए। 'वैक्सीन मैत्री' जैसे मानवीय अभियानों ने भारत की छवि को एक जिम्मेदार, विश्वसनीय और सेवा प्रधान राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत किया। इस नीति के अंतर्गत भारत ने 90 से अधिक देशों को कोविड-19 टीके प्रदान

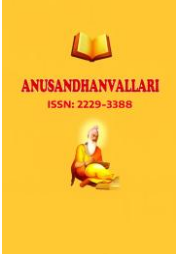


किए, जिससे न केवल भारत की 'सॉफ्ट पावर' को बल मिला, बल्कि वैश्विक मंचों पर भारत के नेतृत्व की सराहना भी हुई। डिजिटल कूटनीति, वर्चुअल शिखर सम्मेलन, और क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से भारत ने महामारी के कठिन समय में भी अपने रणनीतिक हितों की रक्षा करते हुए अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय उपस्थिति बनाए रखी। मोदी सरकार की विदेश नीति ने एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाया जिसमें मानवीय सहायता, रणनीतिक भागीदारी और आत्मनिर्भरता को एक साथ समाहित किया गया।

इसके अतिरिक्त भारत ने अपने पड़ोसी देशों—नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका आदि—के साथ सहयोगात्मक संबंधों को मजबूत कर, क्षेत्रीय स्थायित्व और विश्वास का वातावरण निर्मित किया। इस सहयोगात्मक रणनीति ने चीन जैसी महाशक्तियों के प्रभाव को संतुलित करने में भारत की भूमिका को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कोविड-19 काल में अपनाई गई अंतरराष्ट्रीय रणनीतियाँ केवल संकट से निपटने तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने भारत की दीर्घकालिक वैश्विक भूमिका को नया स्वरूप दिया। भारत आज एक 'मानवता-आधारित वैश्विक शक्ति' (Humanitarian Global Power) के रूप में उभर रहा है, जो संकट के समय न केवल स्वयं की रक्षा करता है, बल्कि दूसरों की सहायता कर वैश्विक नेतृत्व की क्षमता प्रदर्शित करता है।

### अध्ययन के सुझाव

इस अध्ययन के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण सुझाव सामने आते हैं जिन्हें भविष्य की विदेश नीति एवं कूटनीतिक रणनीतियों में सम्मिलित किया जाना चाहिए। सर्वप्रथम, भारत को अपनी **वैक्सीन कूटनीति** को केवल एक अस्थायी मानवीय पहल न मानकर उसे एक **संस्थागत रूप** देना चाहिए, ताकि भविष्य में वैश्विक स्वास्थ्य संकटों के समय भारत एक विश्वसनीय नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित रह सके। इसके अतिरिक्त, **डिजिटल कूटनीति** को और अधिक सशक्त बनाया जाना चाहिए, विशेष रूप से सार्क, बिम्सटेक जैसे क्षेत्रीय मंचों के माध्यम से, जिससे भारत की पड़ोसी देशों में सकारात्मक और स्थायी छवि बने। भारत को **स्वास्थ्य कूटनीति** के क्षेत्र में दीर्घकालिक रणनीति तैयार करनी चाहिए, जिसमें दवा, उपकरण और वैक्सीन के निर्यात को नीति के रूप में विकसित किया जाए। साथ ही, बहुपक्षीय मंचों पर भारत की सक्रिय भागीदारी को और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि वैश्विक नीतियों के



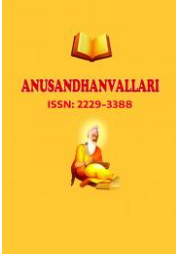
निर्माण में भारत की भूमिका और अधिक प्रभावशाली हो। नीति-निर्माताओं को कोविड-19 काल में प्राप्त अनुभवों का गहराई से विश्लेषण कर भविष्य की रणनीतियाँ तय करनी चाहिए, जिससे भारत आकस्मिक वैश्विक संकटों के लिए अधिक तैयार, संगठित और प्रभावशाली बन सके। इसके अलावा, शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों को भारत की वैश्विक भूमिका पर अधिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि तथ्यों के आधार पर नीतियाँ बनाई जा सकें। अंततः, भारत को अपनी वैश्विक छवि के निर्माण के लिए जनसंचार माध्यमों और सोशल मीडिया का सकारात्मक व रणनीतिक उपयोग करना चाहिए, जिससे अंतरराष्ट्रीय समुदाय में पारदर्शिता, विश्वास और सहयोग की भावना विकसित हो सके।

### अध्ययन की सीमाएँ

इस शोध का निष्कर्ष महत्वपूर्ण है, परंतु इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं जिन्हें स्वीकार करना आवश्यक है। सर्वप्रथम, यह अध्ययन केवल द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) पर आधारित है, जैसे—सरकारी दस्तावेज़, शोध पत्र, समाचार पत्रों के लेख, तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्टें। अतः इसमें प्राथमिक आंकड़ों (Primary Data) जैसे—प्रत्यक्ष साक्षात्कार, प्रश्नावली या फील्ड रिसर्च का समावेश नहीं हो सका, जिससे अध्ययन की व्यापकता सीमित रही। दूसरे, यह विश्लेषण भारत-केंद्रित दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें अन्य देशों की प्रतिक्रियाओं, रणनीतियों और भारत के प्रति उनके दृष्टिकोण का तुलनात्मक मूल्यांकन सीमित रूप से किया गया है। इससे वैश्विक संदर्भ में भारत की स्थिति का पूर्ण आकलन बाधित हो सकता है। तीसरे, कोविड-19 एक निरंतर विकसित होने वाली स्थिति रही है, अतः इस अध्ययन की कालिक सीमा (Time Frame) एक निश्चित अवधि तक सीमित है। महामारी के दीर्घकालिक प्रभाव तथा उससे उत्पन्न कूटनीतिक परिस्थितियों का पूरा आकलन भविष्य में ही संभव होगा।

### संदर्भ सूची

1. कुमार, आर. (2016). *भारत की उभरती वैश्विक भूमिका और विदेश नीति में बदलाव*. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।



2. शर्मा, एस. (2018). *डिजिटल कूटनीति और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का वैश्विक संवाद*. लखनऊ: भारतीय संचार प्रकाशन।
3. मेहता, वी. (2019). *भारत की वैदेशिक सहायता नीति: एक समकालीन विश्लेषण*. मुंबई: नीति विमर्श प्रकाशन।
4. देसाई, एन. (2020). *कोविड-19 के प्रारंभिक चरण में भारत की अंतरराष्ट्रीय रणनीति*. इंटरनेशनल अफेयर्स जर्नल, 12(2), 45-59।
5. चटर्जी, पी. (2021). *वैक्सीन मंत्री पहल का वैश्विक प्रभाव*. दक्षिण एशियाई कूटनीति समीक्षा, 8(1), 33-48।
6. रेड्डी, एस. (2022). *भारत और पड़ोसी देश: कोविड-19 काल में कूटनीतिक परिवर्तन*. हैदराबाद: अंतरराष्ट्रीय नीति संस्थान।
7. जोशी, ए. (2023). *डिजिटल कूटनीति और महामारी: भारत का अनुभव*. नई दिल्ली: पॉलिसी एंड टेक्नोलॉजी फाउंडेशन।
8. वर्मा, टी. (2024). *महामारी के बाद भारत की वैश्विक भूमिका*. वैश्विक अध्ययन मासिक, 16(4), 22-37।
9. सिंह, एम. (2025). *मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में भारत की विदेश नीति की दिशा*. नई सोच पत्रिका, 5(1), 14-28।
10. अय्यर, के. (2025). *कोविड-19 के परिप्रेक्ष्य में भारत की वैश्विक छवि निर्माण*. नई दिल्ली: ग्लोबल पालिसी रिसर्च सेंटर।